जैन जी. के.

General Knowledge

भाग - 7

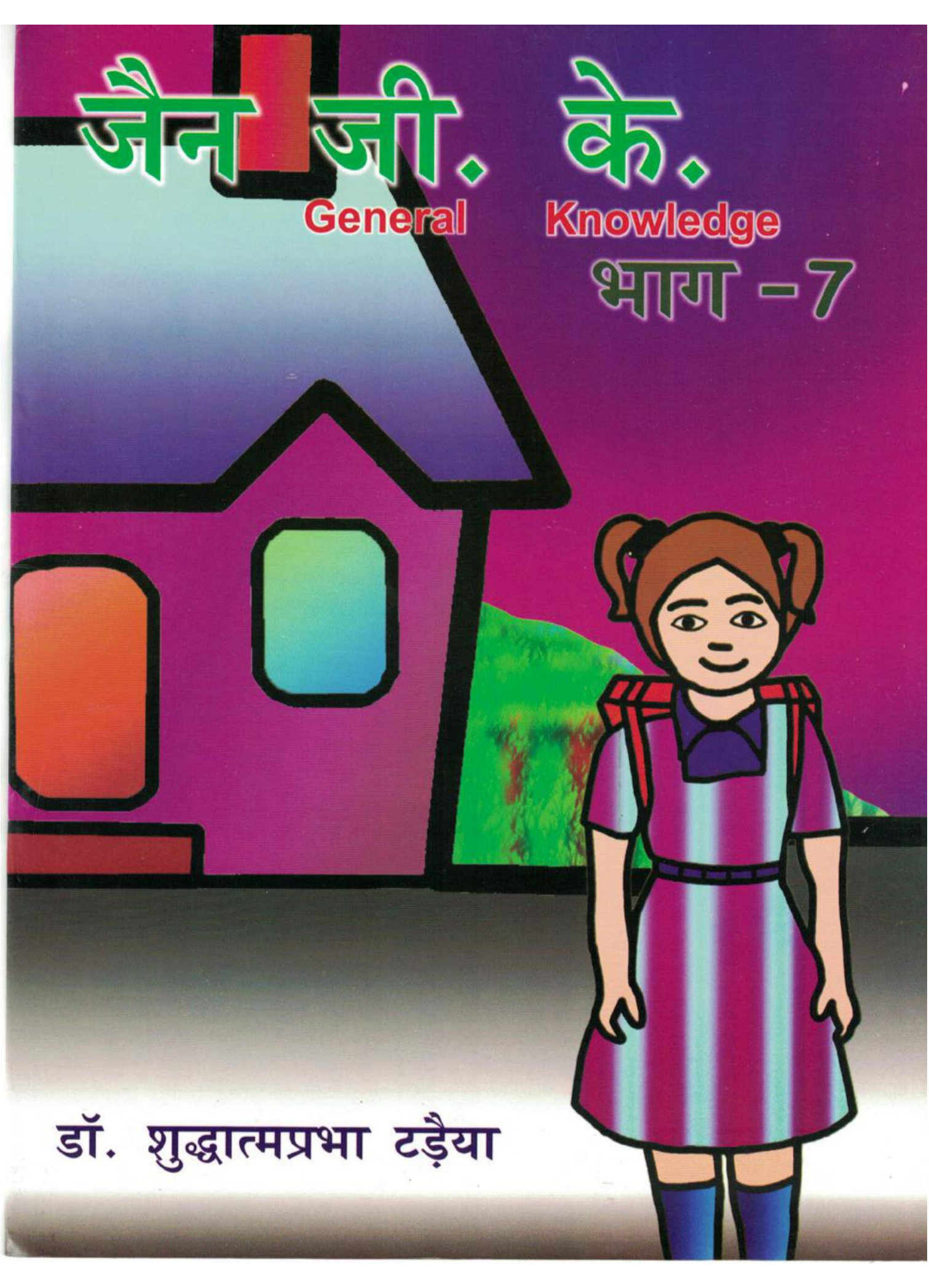

डॉ. शुद्धात्मप्रभा टड़ैया

2 मोक्षमार्ग

आत्मा को निज जानकर,
आत्मा को निज मानकर;
आत्मा में लीनता होती जिनको,
बतलाओ क्या प्रगट होता उनको?
रत्नत्रय

१. दुःखों से छूटने के उपाय को क्या कहते हैं ?
मोक्षमार्ग।

२. दुःखों से छूटने का उपाय क्या है ?
सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान, सम्यक्चारित्र की एकतारूप रत्नत्रय को अपने जीवन में प्रगट करना।

३. मोक्षमार्ग कितने प्रकार का है ?
मोक्षमार्ग एक ही प्रकार का है, लेकिन उसका निरूपण दो प्रकार से होता है - निश्चय मोक्षमार्ग और व्यवहार मोक्षमार्ग।

४. निश्चय मोक्षमार्ग से क्या तात्पर्य है ?
आत्मा में सम्यग्दर्शन -ज्ञान - चारित्र रूप शुद्धि की वृद्धि ही निश्चय मोक्षमार्ग है।

५. व्यवहार मोक्षमार्ग से क्या तात्पर्य है ?
रत्नत्रयरूप परिणत आत्मा में शुद्धता की वृद्धि में साधनभूत शरीराश्रित व्रत, शील, संयमादि व्यवहार मोक्षमार्ग है।

६. क्या निश्चय और व्यवहार सम्यग्दर्शन एक साथ हो सकते हैं ?
हाँ, ये दोनों सम्यग्दर्शन एक साथ ही होते हैं।

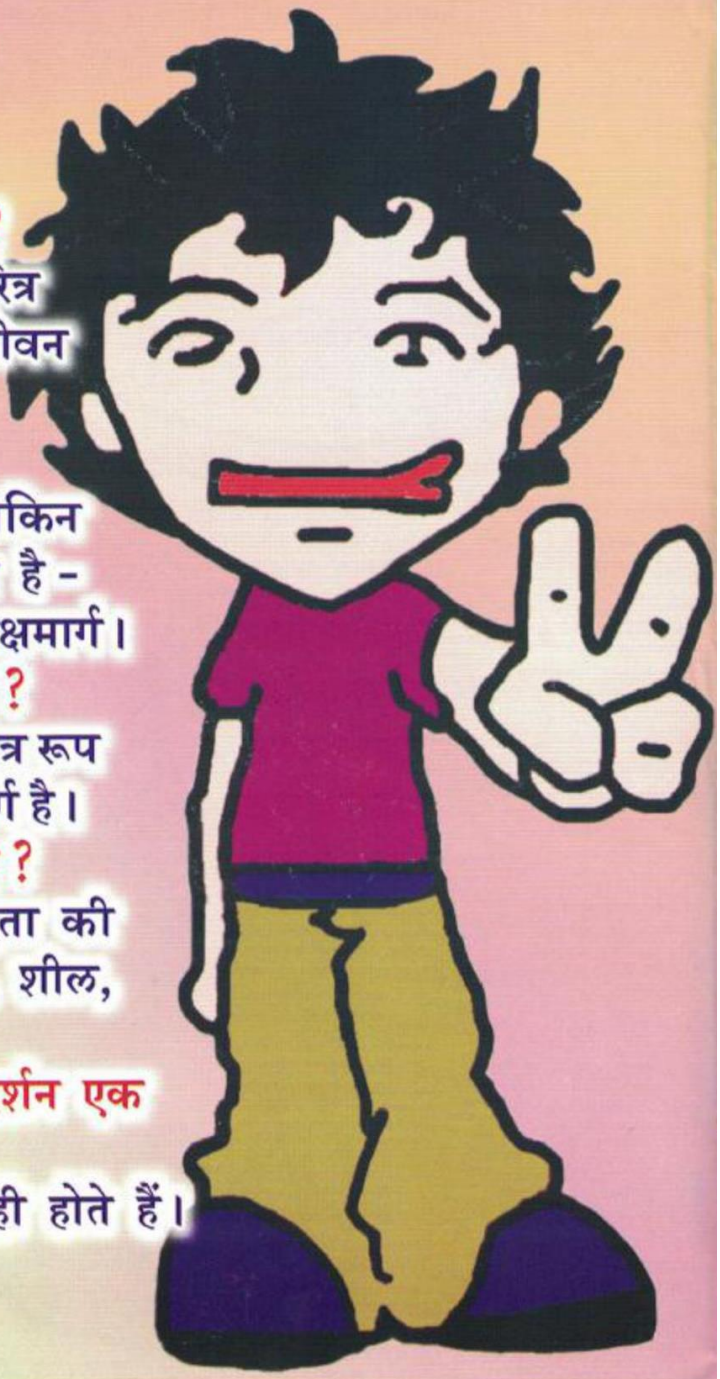

3 कार्य - कारण

१. कार्य किसे कहते हैं ?
पदार्थों के परिणमन को कार्य कहते हैं।
कार्य हमेशा कारण पूर्वक ही होता है।

२. कार्य के पर्यायवाची नाम बताइए ?
पर्याय, परिणाम, परिणति, दशा, हालत, अवस्था आदि।

३. कार्य की उत्पादक सामग्री को क्या कहते हैं ?
कारण ।

४. कारण कितने प्रकार के होते है ?
दो- उपादन कारण और निमित्त कारण।

५. उपादन कारण की अपेक्षा कार्य को क्या कहते हैं ?
उपादेय।

६. निमित्त की अपेक्षा कार्य को क्या कहते हैं ?
नैमित्तिक।

७. कारण - कार्य संबंध को अन्य किन दो नामों से कहा जा सकता है ?
उपादान - उपादेय, निमित्त - नैमित्तिक।

4 उपादान कारण

कार्यरूप परिणमित होता हूँ मैं,
दो रूप में पाया जाता हूँ मैं ।
कार्य होता है मुझमें,
बताओ कौन हूँ मैं ?
उपादान कारण।

१. जो स्वयं कार्य रूप परिणमित हो उसे क्या कहते हैं?
उपादान कारण।

२. उपादान कारण कितने प्रकार का होता है ?
दो- त्रिकाली उपादान, क्षणिक उपादान।

३. क्षणिक उपादन कारण कितने प्रकार का होता है ?
क्षणिक उपादन कारण दो प्रकार का होता है -
(क) अनन्तरपूर्वक्षणवर्त्ती पर्याय के व्यय रूप
(ख) तत्समय की योग्यता रूप

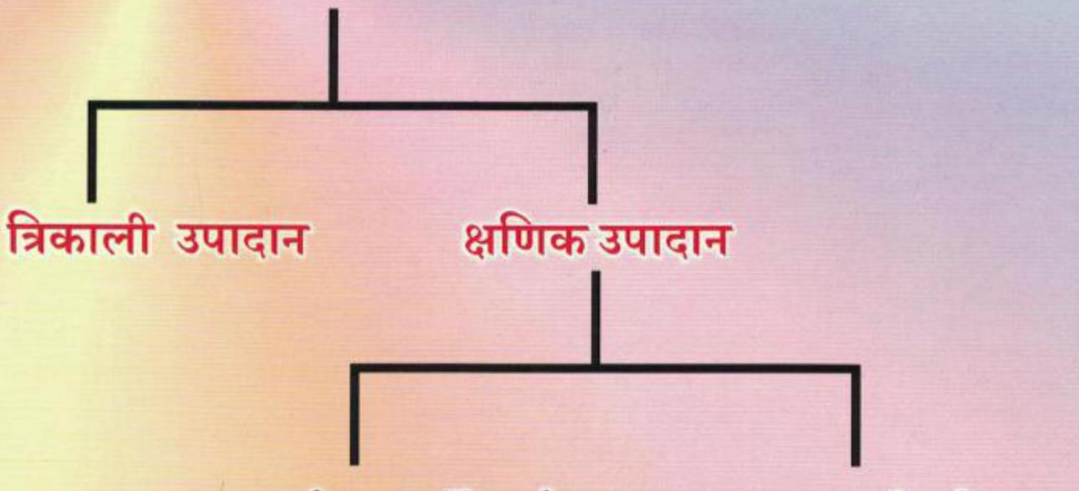

5 उपादान कारण के भेद

जब कार्य होगा तो होगा मुझमें ही,
पर मेरे होने पर कार्य हो जरूरी नहीं ।
कार्य रूप परिणमित होता हूँ मैं,
उपादान कारण हूँ मैं ।
त्रिकाल रहता हूँ मैं,
बताओ कौन हूँ मैं ?

त्रिकाली उपादान कारण

कार्य का नियामक कारण मैं ही होता,
मैं हूँ तो कार्य निश्चित ही होता ।
अनन्तरपूर्वक्षणवर्त्ती पर्याय मैं कहलाता,
क्योंकि कार्य के एक समय पहिले मैं रहता।
कार्य करने की मुझमें होती है योग्यता,
अत: मैं कहलाता हूँ तत्समय की योग्यता।
दो रूप में पाया जाता मैं,
बतलाइए कौन हूँ मैं ?

क्षणिक उपादान कारण

१. कार्य का नियामक कारण कौन है ?
क्षणिक उपादान कारण
२. क्षणिक उपादान कारण
का दूसरा नाम क्या है?
समर्थ उपादान कारण

6 निमित्त कारण

मेरे होने से कार्य होता नहीं,
मेरे बिना भी कार्य होता नहीं ।
मैं हूँ तो कार्य हो जरूरी नहीं,
मुझ में कार्य होता नहीं ।
कार्य हो तो मेरा होना जरूरी है,
कार्य का आरोप आता मुझ पर ही है।
उदासीन - प्रेरक रूप मेरा,
बतलाइए क्या नाम है मेरा।
निमित्त कारण

१. निमित्त कारण किसे कहते हैं ?
जो स्वयं कार्य रूप परिणमित न हो, पर कार्य की उत्पत्ति में अनुकूल होने का आरोप जिस पर आता हो, उसे निमित्त कारण कहते हैं।

२. निमित्तकारण कितने प्रकार का होता है ?
दो- उदासीन और प्रेरक ।

३. उदासीन निमित्त
इच्छाशक्ति रहित निष्क्रिय द्रव्यों को उदासीन निमित्त कहते हैं । जैसे- धर्म, अधर्म, आकाश और काल द्रव्य ।

४. प्रेरक निमित्त किसे कहते हैं ?
इच्छावान और क्रियावान द्रव्यों को प्रेरक निमित्त कहते हैं। जैसे- जीव और पुद्गल द्रव्य।

7 क्रमबद्धपर्याय

१. क्रमबद्धपर्याय का दूसरा नाम क्या है ?

क्रमनियमित पर्याय ।

२. क्रमबद्धपर्याय की सिद्धि में सबसे प्रबल हेतु क्या है ?

सर्वज्ञता ।

३. क्रमबद्धपर्याय से क्या तात्पर्य है ?

जिस द्रव्य की जो पर्याय, जिस काल में, जिस निमित्त और जिस पुरुषार्थ पूर्वक, जैसी होनी है ; उस द्रव्य की वह पर्याय, उस काल में, उसी निमित्त और उसी पुरुषार्थ पूर्वक, वैसी ही होती है अर्थात् जगत में जो भी परिणमन हो रहा है, वह सब निश्चितक्रम में व्यवस्थित रूप से हो रहा है।

४. क्रमबद्धपर्याय में वस्तु की अनंत स्वतंत्रता की घोषणा है या परतंत्रता की और क्यों ? सतर्क उत्तर दीजिए।

क्रमबद्धपर्यार्य में वस्तु की अनंत स्वतंत्रता की घोषणा है। क्योंकि इससे हमें यह पता चलता है कि हमारा सुख-दुःख, जीवन-मरण, भला-बुरा सब कुछ निश्चित है, उसमें अन्य किसी का कोई भी हस्तक्षेप नहीं है।

५. क्रमबद्धपर्यार्य के जानने से क्या लाभ है ?

मैं किसी का और कोई मेरा कुछ अच्छा- बुरा नहीं कर सकता है - यह समझ में आ जाता है, जिससे जीव की आकुलता समाप्त हो जाती है ।

8 क्या आप जानते हो?

१. नित्य परिणमन (परिवर्तन) प्रत्येक द्रव्य का सहज स्वभाव है या विभाव ?
स्वभाव ।

२. स्वभाव पर निरपेक्ष होता है या सापेक्ष ?
निरपेक्ष (अपेक्षा रहित)।

३. द्रव्य में यह परिणमन नियमित क्रम से होता है या अनियमित ?
नियमित।

४. क्या वस्तु (द्रव्य) का परिणमन भगवान के ज्ञान के आधीन है?
नहीं, भगवान का ज्ञान वस्तु के क्रमनियमित परिणमन को मात्र जानता है, करता नहीं।

५. यदि भगवान कुछ नहीं करते, तो द्रव्यों में परिवर्तन कैसे होता है ?
द्रव्यत्व गुण के कारण प्रत्येक द्रव्य अपने परिवर्तन का कर्त्ता स्वयं है। परिवर्तन द्रव्य का स्वभाव है । उसे अपने परिणमन में पर द्रव्य की रंचमात्र आवश्यकता नहीं ।

9 बताओ तो जानें?

१. प्रदेशों के क्रम को क्या कहते हैं ?
विस्तारक्रम

२. पर्यायों के क्रम को क्या कहते हैं ?
प्रवाहक्रम

३. प्रवाहक्रम किसमें होता है ?
काल में

४. विस्तारक्रम किसमें होता है ?
क्षेत्र में

५. क्या प्रदेशों का क्रम निश्चित है ?
हाँ

६. क्या पर्यायों का क्रम निश्चित है ?
हाँ

७. क्या प्रदेशों का क्रम बदला जा सकता है ?
नहीं, प्रदेश जैसे अनादि से हैं, वैसे ही अनंतकाल तक रहते हैं ।

८. क्या पर्यायों का क्रम बदला जा सकता है ?
नहीं, प्रदेश के समान पर्यायों का क्रम भी निश्चित है, उन्हें बदला नहीं जा सकता है।

10 सही उत्तर चुनिए

१. पर्याय में पूर्णता की प्राप्ति हो जाना ..... अवस्था है।
(साध्य, साधक)

२. पूर्ण साध्य ..... अवस्था है ।
(अरहंत, सिद्ध)

३. एकदेश साध्य ..... अवस्था है ।
(अरहंत, सिद्ध)

४. शुभोपयोग और शुद्धोपयोग में झूलना कौन सी अवस्था है?
(साध्य, साधक)

५. शुद्धोपयोग में अनन्तकाल तक रहना कौन सी अवस्था है ?
(साध्य, साधक)

६. तेरहवाँ - चौदहवाँ गुणस्थान ..... अवस्था है ।
(साध्य, साधक)

उत्तर:- साध्य, सिद्ध, अरहंत, साधक, साध्य, साध्य

11 पाँच समवाय

१. कार्य कब होता है ?
पाँच समवायों के होने पर ।

२. पाँच समवाय कौन - कौन से हैं ?
१) स्वभाव २) काललब्धि ३) भवितव्य
४) पुरुषार्थ ५) निमित्त

३. स्वभाव किसे कहते हैं ?
जिस वस्तु में जिस रूप परिणमित होने की त्रिकाल योग्यता है, उसे स्वभाव कहते हैं ।
जैसे- अग्नि में उष्णता और जीव में ज्ञान - दर्शन।

४. काललब्धि किसे कहते हैं ?
जिस काल में कार्य होता है, उसे ही काललब्धि कहते हैं । यह पर्यायगत योग्यता बताता है ।

५. भवितव्य किसे कहते हैं ?
जो कार्य हुआ उसे ही भवितव्य (होनहार) कहते हैं।

६. पुरुषार्थ किसे कहते हैं ?
वस्तु में जिस विधि से, जो प्रक्रिया सम्पन्न हुई उसे पुरूषार्थ कहते हैं ।

७. निमित्त किसे कहते हैं ?
कार्य की उत्पति में अनुकूल होने का आरोप जिस पर आ सके उसे निमित्त कहते हैं।

८. काल को छोड़कर शेष चार समवायों को किस नाम से कहा जाता है ?
अकाल।

12 कारण परमात्मा

१) ध्यान किसका किया जाता है ?
कारण परमात्मा का।

२) कारण परमात्मा कौन हैं ?
शुद्धात्मा ।

३) हम पूजा किसकी करते हैं ?
कार्य परमात्मा की।

४) कार्य परमात्मा कौन है ?
अरहंत, सिद्ध

५) कार्य परमात्मा के ध्यान से क्या होता है?
पूजा-भक्तिरूप विकल्पों की उत्पत्ति।

६) कारण परमात्मा के ध्यान से क्या होता है ?
निर्विकल्प आत्मानुभूति ।

७) निर्विकल्प आत्मानुभूति से क्या होता है ?
रत्नत्रय की उत्पत्ति ।

13 आत्मा की शक्तियाँ

१) शुद्ध चैतन्य भाव प्राणों को धारण करने वाली कौन सी शक्ति है ?
जीवत्व शक्ति ।

२) जीवत्व शक्ति क्या बताती है ?
देह के संयोग से हमारा जीवन नहीं है।

३) अचेतन जड़ पदार्थों से आत्मा को भिन्न रखने वाली कौन सी शक्ति है ?
चितिशक्ति।

४) चितिशक्ति क्या बताती है ?
हम देह रूप नहीं है, अजीव नहीं है ।

५) जीव का मरणभय कैसे दूर हो सकता है ?
जीवत्व शक्ति की सही समझ से।

६) क्या जीवत्व शक्ति मरण से सुरक्षा प्रदान करने वाली है ? सतर्क उत्तर दीजिए ।
नहीं, मरण तो स्वकाल में होगा ही; क्योंकि देह का संयोग त्रिकाली नहीं है । जीवत्व शक्ति तो चैतन्य रूप भावप्राणों की सुरक्षा की गारण्टी देती है, देह के संयोग की सुरक्षा की नहीं ।

14 जिनागम से

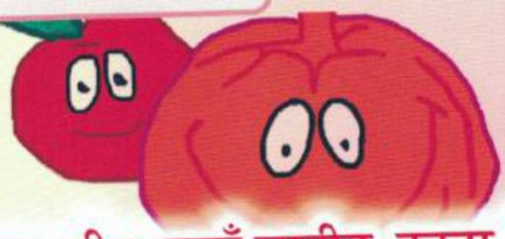

१. संसार में सबसे अधिक समय जीव कहाँ व्यतीत करता है?
तिर्यंच गति में ।

२. तिर्यंच गति में सबसे अधिक समय जीव कहाँ व्यतीत करता है?
एकेन्द्रिय में ।

३. एकेन्द्रिय में सबसे अधिक समय जीव कहाँ व्यतीत करता है?
निगोद में ।

४. जीव निगोद पर्याय से निकलकर अधिक-से- अधिक कितने काल के लिए त्रस पर्याय प्राप्त करता है ?
साधिक दो हजार सागर।

५. जीव त्रस पर्याय में सर्वाधिक समय कहाँ व्यतीत करता है ?
देवगति में

६. जीव देवगति में कितना काल व्यतीत करता है ?
दो तिहाई काल

७. जीव नरकगति में कितना काल व्यतीत करता है ?
एक तिहाई काल

८. देव गति और नरक गति की जघन्य आयु कितनी है ?
दस हजार वर्ष ।

९. देव गति और नरक गति की उत्कृष्ट आयु कितनी है ?
तैंतीस सागर ।

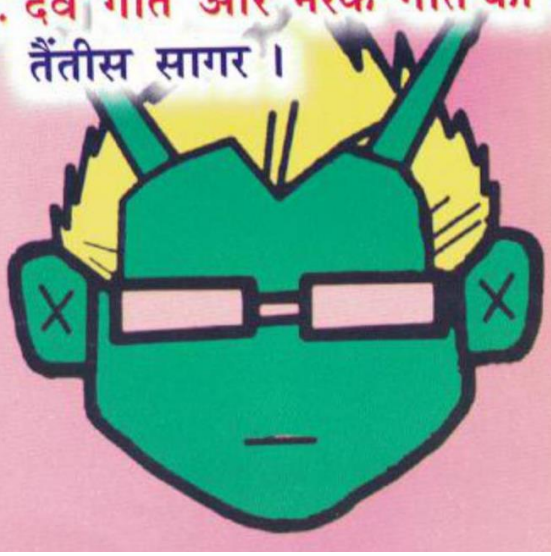

15 भावों का फल

मस्त: बच्चों को सताते हैं हम,
बूढों को चिढ़ाते हैं हम।
सरल स्वभाव वाले हैं हम,
जो मन में आता करते हैं हम।

गुरुजी: जैसा भाव करोगे तुम,
वैसा फल पाओगे तुम।
अल्प आरंभ किये तुमने,
अल्प परिग्रह रखा तुमने।
स्वभाव से भी सरल थे तुम,
अत: मनुज बने हो तुम।

अब
मायाचारी यदि करोगे तुम,
तो तिर्यंच गति पाओगे तुम।
बहुत आरंभ करोगे तुम,
बहुत परिग्रह रखोगे तुम;
तो नरक में जाओगे तुम,
जानते हो क्या यह तुम?
मंद कषाय में जब रहोगे,
शुभभाव तुम तब करोगे;
तो स्वर्ग में जाओगे,
पर संसार ही में रहोगे।
पंचमगति तो तब पाओगे,
जब वीतराग भाव से रहोगे।
अत: मनमौजी अब न बनो तुम,
संयम से रहना अब सीखो तुम।

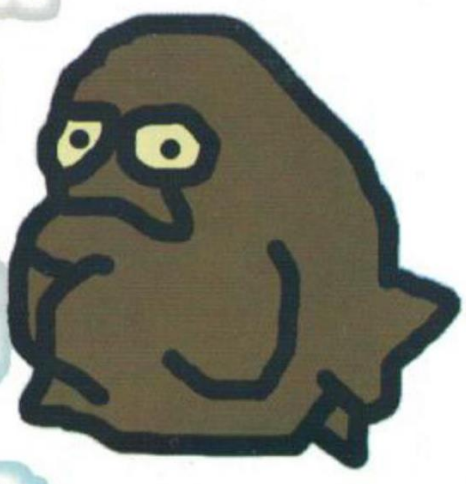

अपने में समागए जब...

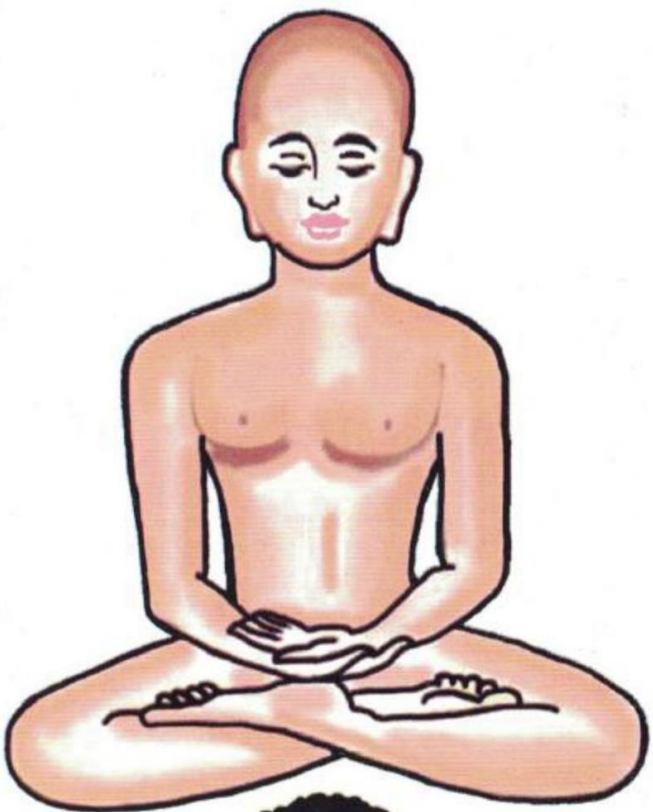

अपने में समा गए जब,
सभी पर हुए पराए तब ।
तन में अपनापन था जब,
सभी अपने लगते थे तब ।
तन को ही 'पर' माना जब,
सारे रिश्ते हुए पराए तब ।
राग नहीं रहा तन से जब,
सभी पर हुए पराए तब ।
तन भी होगया पराया तब,
चेतन में मन रम गया जब।
सभी पर हुए पराए तब,
अपने में समा गए जब ।

बाल साहित्य के क्षेत्र में उत्कृष्ट लेखन हेतु श्री अ.भा. दि. जैन विद्वत्परिषद द्वारा पं. टोडरमल पुरस्कार से सम्मानित विद्वत्रत्न डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया को सम्प्रति ८ मार्च २००८ को महिला दिवस के अवसर पर मुम्बई की महापौर के शुभ कर कमलों से सम्मानित किया गया। प्रसिद्ध विद्वान डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल की आप सुयोग्य ज्येष्ठ पुत्री हैं। आपका जन्म अशोकनगर (म.प्र.) में ३० जनवरी १९५८ को हुआ।

आपने बी. ए. (ऑनर्स) संस्कृत में स्वर्णपदक प्राप्त किया।

आपके द्वारा एम. ए. में लघुशोधनिबंध के रूप में लिखी गई आ. अमृतचंद्र और उनका पुरुषार्थसिध्युपाय नामक पुस्तक मात्र १९ वर्ष की अवस्था (२७ नवम्बर १९७७) में प्रकाशित हो गई।

आपने 'आ. कुन्दकुन्द और उनके टीकाकार: एक समालोचनात्मक अध्ययन' विषय पर शोधकर राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर से पी. एच. डी की उपाधि प्राप्त की है। आपने अपने शोध ग्रन्थ में शोध समीकरणों को ध्यान में रखते हुए आ. कुन्दकुन्द के ग्रंथों और टीकाकारों का सर्वांगीण शोधपरक विवेचन सरल-सुबोध भाषा में प्रस्तुत किया है जो कि विद्वत्-जन और बुद्धिजीवी वर्ग के साथ-साथ जनसामान्य को भी अपनी ओर आकृष्ट करता है।

आधुनिक बाल जैन साहित्य की प्रणेता आपने जैन सिद्धान्तों को सर्वप्रथम पहेलियों के रूप में प्रस्तुत कर जैन बाल साहित्य को नई दिशा प्रदान की है।

आपके द्वारा लिखी गई बाल पुस्तकों में पहेलियों, कविताओं और प्रश्नोत्तर शैली में लिखे गए पाठों के माध्यम से तत्त्वज्ञान एवं भेदविज्ञान कराया गया है। अद्यावधि जैन समाज में प्रचलित अन्य पाठ्यपुस्तकों से भिन्न शैली, रंगीन, चित्रमय प्रस्तुति एवं मूल तत्त्वज्ञान का समावेश - इन पुस्तकों की विशिष्ट पहचान है।

आपने विभिन्न आयुवर्ग को ध्यान में रखकर भिन्न-भिन्न शैलियों में अध्यात्म को जन - जन तक पहुंचाने का प्रयास किया है। गद्य-शैली, पद्य-शैली, चम्पू (गद्य-पद्य मिश्रित) शैली, पत्रशैली, डायरीशैली, छोटे-छोटे मंचन योग्य नाटक, बड़े-बड़े नाटक आदि साहित्य की विभिन्न विधायों के दर्शन आपकी कृतियों में होते हैं।

आपकी सभी कृतियाँ अध्यात्मरस से सराबोर और भेद-विज्ञान से ओतप्रोत हैं। सरलता आपकी कृतियों की सबसे बड़ी विशेषता है। कलरफुल चित्रों के माध्यम से रोचक प्रस्तुति और आकर्षक आधुनिक भाषा-शैली में सर्वप्रथम लिखी गई आपकी बाल पुस्तकें मील का पत्थर साबित हुई हैं।

सम्प्रति वह अपने परिवार के साथ मुंबई में रहती हैं। जहाँ आपके पति का हीरे-जवाहरात एवं डायमंड ज्वैलरी का व्यवसाय है। मुंबई में आप आध्यात्मिक प्रवचन करती ही हैं, तथा शिक्षण - प्रशिक्षण शिविरों में आपके द्वारा बालकों और युवाओं के लिए विशेष कक्षाओं का आयोजन किया जाता है, जिसमें सभी कम समय में अधिक से अधिक तत्त्वज्ञान प्राप्त करते हैं।

आपके द्वारा अभी तक छोटी - बड़ी २८ पुस्तकें लिखी गई हैं, जिनकी सूची अंदर प्रकाशित की गई है।